वेदों में राजनीति

अश्विनी कुमार

राजनीति पुरातन काल से ही मानव जीवन का अभिन्न अंग रही है। वर्तमान समय में राजनीति प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को प्रभावित कर रही है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में राजनीति से जुड़ा हुआ है। राजनीति से अभिप्राय राज्य सम्बन्धी नीति से है। राजनीति अर्थात् राजा के शासन करने की पद्धति। राज्य-तत्त्वों की व्यवस्था की नीति को राजनीति कहा जाता है। राज्य के चार प्रमुख तत्त्व हैं - भूमि, जनता, सरकार एवं सम्प्रभुता। राजनीति के उचित होने पर राज्य सुदृढ़ बनता है और अनुचित होने पर राज्य की अवनति होती है।

प्राचीन काल से ही मनुष्य के सामाजिक विकास में राजनीति का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। राजनीति का ज्ञान हमें वैदिक वाघ्मय से ही प्राप्त हो जाता है।)ग्वेद आदि के अध्ययन से तत्कालीन राजनैतिक विकास का पता चलता है। वेद हमारी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक विचारधाराओं के साथ राजनैतिक विचारधाराओं के भी आदिम स्त्रोात माने जाते हैं। राजनीतिज्ञों तथा शासकों के लिए वेद प्रेरणादायक हैं, क्योंकि इनमें राजनीति के सभी तत्त्वों की जानकारी मिलती है। वेदों में राजा, सभा, समिति, राजा का चुनाव, राजाओं का पदच्युत किया जाना आदि के वर्णन से उस समय की राजनैतिक जागृति के स्पष्ट दर्शन होते हैं। उस समय राजा का प्रजा पर पूर्ण नियन्त्राण होता था। प्रजा भी राजनीतिक रूप से सजग होती थी। उस समय सभा या समिति ही राजा का चुनाव करती थी। वैदिक काल का यह राजनैतिक विकास निरन्तर बढ़ता चला गया।

प्राचीन भारत के महत्त्वपूर्ण राजवंशों का पता हमें वैदिक एवं पौराणिक साहित्य से लगता है। सूर्य और चन्द्रवंश के कितने ही राजाओं ने भारत के विभिन्न भागों को जीतकर चक्रवर्ती की पद्वी को प्राप्त किया था। इक्ष्वाकु, शर्याति, पुरुरवा, ययाति, यदु, भरत, कुरु आदि प्राचीन भारत के महत्त्वपूर्ण राजा थे, जिनका उल्लेख ऋग्वेद में आता है तथा जिनकी कीर्तिगाथा पुराणों में भी प्राप्त होती है।

प्राचीन भारत में राजनैतिक विकास भी सामाजिक जीवन के समान ही हुआ था। सांस्कृतिक प्रगति से ही राजनीतिक जागृति उत्पन्न हुई। वैदिक अध्ययन से पता चलता है कि जीवन का प्रत्येक पहलु सांस्कृतिक आधारशिला पर आश्रित था। उस समय का राजनीतिक जीवन भी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित था। वैदिक काल में बहुत से राजा हुए हैं। उन्होंने परस्पर तथा दस्युओं के साथ युद्ध किया, परन्तु अपनी प्रजा के लोकहित तथा जनकल्याण का पूरा ध्यान रखा। वेदकालीन प्रजा अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति पूरी तरह से जागरूक थी।

वैदिक काल में राजसत्ता के स्वरूप को ग्रहण करने से पूर्व प्राचीन भारत में कबीलों का अस्तित्त्व था। ऋग्वेद में समूह के लिए गण शब्द का प्रयोग हुआ है। वेदकालीन आर्य समाज कुटुम्बों, जन्मनों, विशों और जनों में विभक्त था -

सइज्जेनसविशासजनमना।
सपुत्रैर्वाजंभरतेधानानृभिः।।[1]

विश की उत्पत्ति बहुत से गाँवों को मिलाकर होती थी। विश शब्द जनसाधारण के लिए प्रयुक्त होता था। विश के सत्ताधीश को विश्वपति कहते थे। ऋग्वेद में एक स्थान पर यम को विश्वपति एवं पिता[2] कहकर पुरों का संरक्षक कहा गया है। वैदिक युग के पश्चात् विंशापति शब्द राजा के अर्थ में प्रयोग किया जाता था। विशपति का मुख्य कर्तव्य विश के अन्तर्गत ग्रामों के पारस्परिक सम्बन्धों को सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित रखना था। अनेक विशों के समूह से जन बनता था और जन का सर्वोपरि

---

1. ऋग्वेद, 2.26.3
2. अत्रा वो विश्वपतिः पिता पुराणां अनुवेनति। वही, 10.135.1

राजा होता था। प्रजा ही राजा का चुनाव करती थी और उसे रक्षा कर सकने योग्य बनाती थी। उसमें रक्षा के गुण तो पहले से ही विद्यमान होते थे। अत: उसे राज्याधिकार देकर मानो नया जीवन देती थी –

विश्वा:पृतनाअभिभूतरंनरंसंजूस्ततक्षुरिन्द्रैजजनुश्चराजसे।
क्रतवावरिष्ठंवरआमुरितोग्रामोजिष्ठंतंबसैतरस्विनम्।।[3]

वैदिक साहित्य में स्थान-स्थान पर राजपद शब्द का उल्लेख किया गया है। राजा के अधीन होकर जहाँ जन रहते थे, वह जनपद कहलाता था। ऋग्वेद में बहुत से राजाओं का उल्लेख मिलता है, जिससे स्पष्ट होता है कि उस युग में पूरा देश अनेक राज्यों में बंटा हुआ था। अधिकाँश राज्यों की उत्पत्ति एक विशेष जन या कबीले से सम्बद्ध थी। ऋग्वेद में पाँच कबीले विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं –1. अनु, 2. द्रह्यु, 3. यदु, 4. तुर्वश तथा 5. पुरु।[4] ब्राह्मण तथा उपनिषद काल में राज्यों के विस्तार में वृद्धि होने लगी। अनेक जन या कबीले एक राज्य में सम्मिलित होने लगे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक छोटे-छोटे भ्रमणशील जातीय समुदायों के स्थान पर बड़े और निश्चित भू-भाग युक्त राज्यों उल्लेख उपलब्ध है।[5]

ऋग्वेद में इन्द्र की प्रार्थना समाज या सम्राट के रूप में की गई है। एक मन्त्र में उन्हें एकराट कहा गया है।[6] ऋग्वेद के अनुसार राजा को चाहिए कि वह अपनी प्रजा के खान-पान, निवास स्थान, शिक्षा-दीक्षा, रक्षा-सुरक्षा की समुचित व्यवस्था करे[7], राज्य संचालन हेतु मंत्री एवं पुरोहितों से परामर्श करे[8], युद्धोपयोगी उपकरणों एवं अस्त्र संचालन की सुव्यवस्था करे, राज्यविस्तार के लिए प्रयत्नशील हो, समाजवाद को प्रश्रय दे तथा सेनापति एवं वीर सैनिकों को सब प्रकार से प्रसन्न रखे।[9] क्षिप्रकारिता, उत्साह, शासन करने की योग्यता, विद्वता, संस्कृति प्रियता, दानशीलता, दूरदर्शिता, संकट का सामना करने की तत्परता, स्थिरमति, दृढ़विचारशक्ति, उत्तमकार्य प्रणाली, कष्ट-सहिष्णुता, नेतृत्व की योग्यता, सज्जनों की रक्षा करने की सामर्थ्य, स्वावलम्बन, विश्वमंगल कामना आदि राजा के प्रमुख गुण माने गए हैं।[10]

प्रतिद्युतानामरूषासोअश्वाक्षित्रअदृश्रन्नुषसंवहन्तः।
यातिशुभ्राविश्वपिशारथेनदधातिरत्नंविधातेजनाम।।[11]

ऋग्वेद की इस ऋचा की व्याख्या में कहा गया है कि उत्तम गुणों वाली स्त्री रानी बनकर राष्ट्र का प्रशासन भी कर सकती है।

ऋग्वेद के अनुसार मन्त्री के कार्य इस प्रकार हैं – राष्ट्र में प्रजा की उत्तम व्यवस्था करना और राजा के विचारकों से सामंजस्य रखना।[12]

वैदिककालीन प्रजातन्त्रीय शासन में अत्याचारी राजा को पदच्युत करके उसके स्थान पर उत्तम और श्रेष्ठ राजा को मनोनीत करने का प्रजा को पूरा अधिकार था। वैदिक युग में राजा अकेले शासन नहीं करता था, उसकी सहायता के लिए सभा

---

3. वही, 8.97.10
4. विमलचन्द्र पाण्डेय, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, पृ0 104
5. By the sixth century B.C. in place of small tribaland often floating of the Early Vedic period, big territorial states had come in to existence. ; S.L. Roy, Diplomacy in Ancient India.
6. एकराऽस्य भुवनस्य राजसि शचीपतः इन्द्रः, ऋग्वेद, 8.37.3
7. वही, 1.12.2, 1.17.1-2, 1.54.11, 7.7.1, 7.31.6
8. वही, 1.17.3-4, 5.50.7-9
9. वही, 1.53.7, 1.55.1, 1.55.8, 1.103.2, 5.37.4, 6.2.7
10. ऋग्वेद, 1.61.2, 1.63.3-8, 3.29.6, 3.53.9, 3.54.17, 3.65.21, 4.4.4, 5.58.4, 10.173.1
11. वही, 7.75.6
12. वही, 1.8.6, 1.17.3-4

और समिति नाम की दो संस्थाएं होती थीं - सभ्य सभां मे पाहि ये च सभ्या: सभासद:।[13] अथर्ववेद के इस मन्त्र में राजा प्रार्थना करता है कि - सभा मेरी रक्षा करे, उसके जो सभ्य सभासद हैं वे मेरी रक्षा करें।

अथर्ववेद के अनुसार राज्य के अस्तित्त्व की सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि उसमें सर्वगुणसम्पन्न नागरिकों का निवास हो, जल, वायु, अग्नि, सिंचाई, धनधान्य, उद्योग, कृषि, उत्तम औषधियाँ और रत्न प्रचुर मात्रा में हों। प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति के लिए उन्नति के मार्ग हों, प्रजापालन उचित रीति से हो, प्राकृतिक स्थल शत्रुओं से रहित हों, चोर-डाकु, हिंसक और विषैले जन्तु तथा आततायियों का अभाव हो, अपनी गतिविधियों की जानकारी शत्रुओं को न मिले तथा लोग शत्रुओं को पराजित करने वाले हों।[14] राजा प्रजारंजक, सर्वगुणसम्पन्न, शत्रुसंहारक और कर्तव्य परायण हो।[15] प्रजा ऐसे व्यक्ति को राजा बनाए जो तेजस्वी, प्रजारंजक, राष्ट्रहित में तत्पर और विद्वानों की सम्पत्ति से शासन करने वाला हो।[16]

यजुर्वेद के अनुसार राजा दुष्कर्मों का विनाश करे, न्यायप्रिय सज्जनों की रक्षा करे।[17] यजुर्वेद में राजा की नियुक्ति का अधिकार प्रजा को दिया गया है। तदनुसार प्रजा को सर्वगुणसम्पन्न और कर्तव्यनिष्ठ राजा का ही हितसाधन करना चाहिए।[18] कर ग्रहण करना, राजा और राजकीय कर्मचारियों को दुर्व्यसनों से दूर रखना, उन्हें ऐश्वर्य संवर्द्धन के लिए प्रोत्साहित करना आदि कर्तव्य मन्त्री के लिए निर्धारित किए गए हैं।[19] अपराधियों को दण्ड देने और निरपराधियों की रक्षा करने के लिए राजा को ही न्यायधीश का पद ग्रहण करने पर बल दिया गया है।[20] सेनापति के गुण और कर्तव्यों को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि - शत्रुओं को नियन्त्रित करना, अस्त्र-शस्त्र संचालन में कुशलता प्राप्त करना, विद्वता, निष्पक्ष व्यवहार, बलशीलता, शत्रुओं को अपनी सेना से छिन्न-छिन्न करके विजय प्राप्त करने की इच्छा करना, सेना को व्यूहबद्ध करना, अपने स्वास्थ्य की रक्षा करना, सेना को प्रसन्न रखना इत्यादि सेनापति के कार्य हैं।[21]

अथर्ववेद के 7/87-88 सूक्त भी राजा के संवरण से सम्बन्धित हैं। अथर्ववेद के दो सूक्तों 3.3 तथा 3.4 में राजा के पुन: स्थापन एवं प्रजा द्वारा संवरण का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसमें सभा एवं समिति के रूप में राजनैतिक संगठन का भी संकेत मिलता है।[22] इस प्रकार वेदों में अनेक स्थानों पर राजनीति सम्बन्धी विचारों का विवेचन है।

इस प्रकार वैदिक साहित्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय राजतन्त्र हुआ करता था। राजा अपनी प्रजा का पुत्रवत पालन किया करते थे तथा प्रजा भी पिता के समान राजा का आदर-सम्मान किया करती थी।

---

[13]. अथर्ववेद, 11.15.5
[14]. अथर्ववेद, 12.1
[15]. वही, 3.6, 3.88, 7.62, 7.84-86
[16]. वही, 3.4.1-5, 6.87
[17]. यजुर्वेद, 6.1-3, 6.2, 12.6, 30.5, 30.9
[18]. वही, 6.32-33, 7.29-30, 8.50, 9.25, 10.17, 12.13, 14.23, 16.6, 16.50, 20.10, 20.47-49, 20.83, 27.4-7, 30.3-4
[19]. वही, 9.25, 27.8, 33.62
[20]. वही, 7.17
[21]. वही, 5.37, 61.19-20, 7.22, 8.53, 9.25, 12.34, 16.3, 18.69-71, 33.67
[22]. अथर्ववेद, 7.12.1-2